प्रो० (डॉ०) सुधीर कुमार सिंह, प्राचार्य एवं अध्यक्ष
समाजशास्त्र विभाग, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम

Paper - V : सामाजिक विचारों का इतिहास

B.A. PART - III (Hours's)

Topic — गाँधीजी के सत्याग्रह का सिद्धांत :

महात्मा गांधी के सत्याग्रह का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अहम योगदान रहा है। जनवरी 1915 में गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौट आए। इससे पहले उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में शोषण, अन्याय, एवं रंगभेद की नीति के विरुद्ध सत्याग्रह आंदोलन प्रारंभ किया था।

गांधीजी के नेतृत्व में बिहार के चम्पारण जिले में सन् 1917 में एक सत्याग्रह हुआ। इसे चम्पारण सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। गांधीजी के नेतृत्व में भारत में किया गया यह पहला सत्याग्रह था।

चंपारण आंदोलन में गांधीजी के नेतृत्व में किसानों की एकजुटता को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने जुलाई 1916 में एक आयोग का गठन किया। एवं गाँधीजी को भी इस आयोग का सदस्य बनाया गया। आयोग की सलाह पर सरकार ने तिनकठिया पद्धति को समाप्त कर दिया। और किसानों से वसूले गए

धन का २५ प्रतिशत वापस कर दिया। इस आंदोलन में गांधीजी के कुशल नेतृत्व से प्रभावित होकर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें 'महात्मा' नाम से संबोधित किया। इस आंदोलन में गांधीजी के साथ सं राजकुमार शुक्ल, राजेन्द्र प्रसाद, महादेव देसाई, ब्रज किशोर जी की पत्नी भी शामिल थे।

'सत्याग्रह' एक हिन्दी शब्द है, जिसका अर्थ है 'सत्य के लिए आग्रह'। व्यवहार रूप में यह बुराई विशेष के प्रति दृढ़, लेकिन अहिंसक प्रतिरोध के रूप में प्रकट हुआ। ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध भारतीय जनता के संघर्ष में सत्याग्रह एक मार्गदर्शक था।

सत्याग्रह का अनुयायी सत्य एवं अहिंसा का पालन करते हुए शांति एवं प्रेम को लक्ष्य सामने रखकर आत्मिक बल का प्रयोग करता था। यह एक प्रकार से निष्क्रिय प्रतिरोध था, जो व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कष्ट सहन द्वारा विरोधी का हृदय परिवर्तन करने में सक्षम है। महात्मा गांधी के अनुसार सत्याग्रह और असहयोग गरजनेवालों और डींग मारनेवालों का अस्त्र नहीं है। यह तो आपकी ईमानदारी और कसौटी है। इसमें धैर्य और मूक आत्मबलिदान की आवश्यकता है।

× ——— × ——— × ——— × ——— ×